

**सरीकत स्त्री.** (फा.) 1. शिरकत, शामिल होना 2. साझा।

**सरीख वि.** (फा.) सदृश, सरीखा, समान।

**सरीखा वि.** (फा.) अवस्था, गुण, रूप, आदि में किसी के बराबर होना।

**सरीसृप पुं.** (तत्.) 1. जमीन पर रेंग कर चलने वाले जन्तु जैसे- छिपकली, मगर, सांप आदि 2. विष्णु का एक नाम।

**सरीसृप विज्ञान पुं.** (तत्.) जीव विज्ञान की एक शाखा जिसमें सरीसृपों का अध्ययन किया जाता है।

**सरीह वि.** (अर.) 1. प्रकट, खुला हुआ 2. व्यक्त।

**सरुचि क्रि.वि.** (तत्.) रुचि के साथ, इच्छानुसार, शौक या शौक के साथ।

**सरुज वि.** (तत्.) रोगयुक्त, रोगग्रस्त, बीमार।

**सरुहाना स.क्रि.** (देश.) स्वस्थ करना, सुधारना, सुलझाना।

**सरु वि.** (तत्.) 1. पतला, छोटा 2. तीर, बाण, शर 3. तलवार की मूठ।

**सरूप वि.** (तत्.) 1. किसी के रूप जैसा होना, समान या सदृश होना 2. सुंदर रूप वाला 3. जिस में आकार या रूप हो, रूपयुक्त।

**सरूपा स्त्री.** (तत्.) दानव स्त्री जो असंख्य रुद्रों की मां थी।

**सरूपी वि.** (तत्.) 1. किसी के जैसा रूप वाला या वाली 2. जिसका रूप और आकार हो सरूप।

**सरूर पुं.** (फा.) 1. प्रसन्नता, आनंद, खुशी 2. किसी मादक पदार्थ का हल्का और सुखद नशा 3. खुमार, हलका नशा।

**सरूष वि.** (तत्.) क्रोध, रोष युक्त, कुपित, क्रोधित।

**सरे-आम अव्य.** (फा.) संध्या होते ही या उससे कुछ पहले ही।

**सरेआम क्रि.वि.** (फा.+अर.) लोगों के बीच में, आम जनता के सामने। सार्वजनिक रूप से।

**सरेख वि.** (तद्.) 1. अवस्था में बड़ा और समझदार, सयाना 2. चालाक, चतुर।

**सरेखना पुं.** (तद्.) सहेजना, समेटना।

**सरेखा पुं.** (तद्.) 1. सहेलने, सरेखने, समेटने की क्रिया या भाव 2. अश्लेषा नक्षत्र।

**सरेदस्त अव्य.** (फा.) सम्प्रति, अभी, इस समय, प्रस्तुत समय में, फिलहाल।

**सरे नौ अव्य.** (फा.) 1. प्रारंभ से, शुरू से 2. नये सिरे से, पुनः

**सरे-बाजार अव्य.** (फा.) बीच बाजार में, बाजार में लोगों के सामने।

**सरे राह अव्य.** (फा.) रास्ते में, रास्ता चलते हुए, आम रास्ते में।

**सरेला पुं.** (तद्.) 1. पाल में लगी रस्सी जिसे ढीला करने से पाल की हवा निकल जाती है 2. वह रस्सी जिसमें मछली फँसाने का कांटा या बंसी बंधी रहती है, शिस्त।

**सरेश पुं.** (फा.) सरस, एक लसदार पदार्थ जो ऊंट, गाय, भैंस आदि के चमड़े और हड्डियों या मछली के पोटे को पकाकर निकालते हैं, जो लकड़ियों आदि को जोड़ने या सफेदी को पक्का करने (ताकि वह जल्दी न उतर जाए) के लिए प्रयोग किया जाता है वि. लचीला और चिपकने वाला।

**सरस-माही पुं.** (फा.) मछली के पोटे को उबालकर तैयार किया गया सरस।

**सरोट स्त्री.** (देश.) कपड़ों आदि की सिलवट।

**सरो पुं.** (फा.) एक प्रकार का सीधा छतनार पेड़ जो बाग-बगीचों में सजावट के लिए लगाया जाता है, बनझाड़।

**सरोई पुं.** (तद्.) एक प्रकार का बड़ा वृक्ष।

**सरोकार पुं.** (फा.) परस्पर व्यवहार का संबंध, लगाव, वास्ता, संबंध।

**सरोकारी वि.** (फा.) सरोकार रखने वाला, जिससे सरोकार, लगाव, संबंध हो।